GLOBAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES UGC APPROVED ISSN: - 2348-0459
www.gjms.co.in
Volume-6, Issue-7, June 2017 Impact Factor: 3.987

Paper ID: UGC 48846-849

आधुनिक संचार माध्यम

डॉ. संतोष कुमार सिंह
असि0 प्रोफेसरकॉलेज ऑफ एजूकेशन, बिलासपुर, ग्रेटर नोएडा

सारांश संचार के द्वारा व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों का जहाँ व्यवहार नियंत्रित करता है वहीं उन्हें वह समूह में भी बाँधता है। अतः संचार जहाँ मानव के अन्तर्क्रियाओं में अवरोधों को तोड़ता है वहीं व्यक्तियों के बीच आपसी सहमति और जागरूकता भी उत्पन्न करता है। वस्तुतः संचार का अर्थ है किसी बात को आगे बढ़ाना, चलाना या फैलाना।[1] संचार में भौतिक सभ्यता एवं संचार माध्यमों की तकनीकी विकास या सभ्यता सम्मिलित है। संचार का सीधा सा अर्थ होता है, जब दो व्यक्ति आपस में अपने मनोभावों को देहभाषा, इशारा, संकेतों या भाषा/शब्दों के माध्यम से व्यक्त करें और समझे तो समझें कि संचार हो रहा है। हिन्दी के संचार शब्द का समानार्थक आंग्ल भाषा में कम्युनिकेशन (Communication) माना जाता है। कम्युनिकेशन शब्द लैटिन भाषा के कम्युनिस (Communis) से बना है, जिसका अर्थ सामान्यीकरण, सहभागी, प्रवेश एवं संचार (Tomake common, to share, to import, to transmit) है।[2] संचार शब्द अंग्रेजी के 'मीडिया' शब्द के समान प्रयोग में लाया जाता है। इसका अभिप्राय है – दो बिन्दुओं को जोड़ने वाला साधन। संचार के द्वारा संप्रेषक और श्रोता (संचार पाने वाला) के बीच सूचनाओं का परस्पर आदान–प्रदान होता है। इस प्रकार संचार एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है जो परस्पर सम्बद्ध एवं उद्देश्यपूर्ण है। संचार के द्वारा व्यक्ति के समझदारी का विकास होता है।

शब्दकोश संचार, सामाजिक प्रक्रिया ,आदान–प्रदान

प्रस्तावना

संचार प्रक्रिया के द्वारा ही संचार की अभिव्यक्ति होती है। संचार वास्तव में एक सूचना सम्प्रेषण की प्रक्रिया है। इस कारण संचार प्रक्रिया का प्रारम्भ सूचना प्रेषक एवं सूचना ग्राहक (श्रोता) के मध्य संदेशों के आदान–प्रदान से होता है। सूचना प्रेषक सूचना प्रेषण के द्वारा श्रोता के विचार व्यवहार और तौर–तरीकों को परिवर्तित करने का प्रयास करता है। सूचना सम्प्रेषण मात्र ही संचार नहीं है वरन् श्रोता/ग्राहक में प्रभावी प्रतिक्रिया भी उत्पन्न होनी चाहिए। प्रभावी प्रतिक्रिया को प्रतिपुष्टि अथवा फीडबैक के रूप में जाना जाता है।[3]

संचार के द्वारा व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों का जहाँ व्यवहार नियंत्रित करता है वहीं उन्हें वह समूह में भी बाँधता है। अतः संचार जहाँ मानव के अन्तर्क्रियाओं में अवरोधों को तोड़ता है वहीं व्यक्तियों के बीच आपसी सहमति और जागरूकता भी उत्पन्न करता है। वस्तुतः संचार का अर्थ है किसी बात को आगे बढ़ाना, चलाना या फैलाना।[4] संचार में भौतिक सभ्यता एवं संचार माध्यमों की तकनीकी विकास या सभ्यता सम्मिलित है।

संचार के क्षेत्र में समाज के विकास एवं आधुनिकीकरण के साथ–साथ परिवर्तन आये और समाज तथा संचार का ढांचा बदला। संचार के माध्यमों का विकास हो सका। यदि हम मानव समाज एवं इसके औद्योगिक विकास की प्रक्रिया को देखें तो स्पष्ट हो सकेगा कि मनुष्य ने भोजन, वस्त्र एव आवास से जुड़े क्षेत्रों में निरंतर विकास के लिए अनुसंधान किया। इसी कड़ी में यातायात के साधनों के क्षेत्र में भी क्रांति आई। लेकिन मनुष्य अपने आभ्यन्तर में विद्यमान सम्प्रेषण की भूख को मिटाने के लिए संचार के क्षेत्र में अद्भुत विकास किया। इसके परिणामस्वरूप अन्य उद्योग संचार उद्योग से पीछे छूट गये। वर्तमान समय में सूचना उद्योग एवं तकनीक सबसे आगे है।

संचार का सीधा सा अर्थ होता है, जब दो व्यक्ति आपस में अपने मनोभावों को देहभाषा, इशारा, संकेतों या भाषा/शब्दों के माध्यम से व्यक्त करें और समझे तो समझें कि सचार हो रहा है। हिन्दी के संचार शब्द का समानार्थक आंग्ल भाषा में कम्युनिकेशन (Communication) माना जाता है। कम्युनिकेशन शब्द लैटिन भाषा के कम्युनिस (Communis) से बना है, जिसका अर्थ सामान्यीकरण, सहभागी, प्रवेश एवं संचार (Tomake common, to share, to import, to transmit) है।[5] संचार शब्द अंग्रेजी के 'मीडिया' शब्द के समान प्रयोग में लाया जाता है। इसका अभिप्राय है – दो बिन्दुओं को जोड़ने वाला साधन। संचार के द्वारा संप्रेषक और श्रोता (संचार पाने वाला) के बीच सूचनाओं का परस्पर आदान–प्रदान होता है। इस प्रकार संचार एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है जो परस्पर सम्बद्ध एवं

उद्देश्यपूर्ण है। संचार के द्वारा व्यक्ति के समझदारी का विकास होता है। ऐसे ही संचार वह प्रक्रिया है, जिसमें स्रोत एवं श्रोता के मध्य सूचना संचार होता है।[6] संचार संदेश संप्रेषण की प्रक्रिया है। संचार ही मानव समाज की संचालन प्रक्रिया को संभव बनाता है। संचार, भूख, प्यास, काल की भांति मनुष्य से मौलिक इच्छा या मौलिक प्रवृत्ति है। इस कारण स्वयं की इच्छा एवं सूचना को दूसरे से व्यक्त करना तथा दूसरे की इच्छा एवं सूचना को जानना मनुष्य की स्वार्थिक प्रवृत्ति है। संचार शब्द संस्कृत के 'चर' धातु से बना है। चर का अभिप्राय है – 'चलना' इससे संचार शब्द बना जिसका मतलब है आगे 'बढ़ना', 'फैलना', 'गमन' या 'संदेश वाहक' साधन आदि। संचार के अलावा आजकल एक 'जनसंचार' शब्द प्रचलित हुआ है, 'जनसंचार' शब्द के परिक्षेत्र में जन, संचार, संचार केन्द्र, संचार माध्यम, संचार उपग्रह, जनसंचार आदि जनसंचार माध्यम शब्द व्यवहार किया जाता है। जनसंचार के जन का अर्थ है जनता। जो बिना किसी धर्म, रंग, लिंग आदि की होती है। इसमें जन एक समूह के रूप में होता है जिसके लिए संचार माध्यम संचार करते हैं।

हिन्दी के संचार शब्द का समानाथक आंग्ल भाषा में कम्युनिकेशन माना जाता है। कम्युनिकेशन शब्द लैटिन भाषा के कम्युनिस से बना है, जिसका अर्थ सामान्यीकरण, सहभागी, प्रवेश एवं सम्प्रेषण है। इस प्रकार संचार ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है, जो परस्पर सम्बद्ध एवं उद्देश्यपूर्ण है। संचार के द्वारा व्यक्ति में समझदारी का विकास होता है।[7] संचार वह प्रक्रिया है जिसमें स्रोत एवं श्रोता के मध्य सूचना सम्प्रेषण होता है।[8] इस प्रकार संचार संदेश सम्प्रेषण की प्रक्रिया है। संचार ही मानव समाज की संचालन प्रक्रिया को संभव बनाता है। संचार, भूख, प्यास, काम की भांति मनुष्य की मौलिक इच्छा या मौलिक प्रवृत्ति है। इस कारण स्वयं की इच्छा एवं सूचना को दूसरे से व्यक्त करना तथा दूसरे की इच्छा एव सूचना को जानना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। मनुष्य की इसी स्वाभाविक या मौलिक प्रवृत्ति का विस्तार विश्व सूचना व्यवहार के रूप में वर्तमान में व्याप्त है। संचार ही वह व्यवहार है, जिसने समाज को संभव बनाया। सामाजिक व्यवहार में संप्रेषण स्पष्ट तथा शंकाहीन भावाभिव्यक्ति है। मनुष्य के संप्रेषण में हाव–भाव, भाषा प्रमुख आधार है। भाषा सम्प्रेषण को स्पष्ट एवं बोधगम्य बनाती है। भाषा व्यक्तियों के व्यवहारों में समरूपता लाती है।[9] मनुष्य के सम्पर्क एवं समाज के विकास के साथ–साथ संचार प्रक्रिया का विकास एवं नवीन स्वरूपों का अस्तित्व विकसित हुआ है। संचार की प्रक्रिया में स्रोत एवं श्रोता के मध्य सूचनाओं का आदान–प्रदान होता है।[10] संचार के अन्तर्गत मनुष्य अपने अनुभवों का भी आदान–प्रदान करता है। यह आदान–प्रदान, प्रक्रिया–प्रत्यक्ष, परोक्ष, शाब्दिक तथा अशाब्दिक रूपों में होती है।[11]

आधुनिक जनसंचार माध्यमों के तीन भाग हो सकते हैं – (1) डाक प्रणाली, (2) प्रिंट माध्यम और (3) इलेक्ट्रॉनिक माध्यम। आधुनिक युग में प्रिंट माध्यम और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम समाज पर छा गये हैं इन्हें हम इस प्रकार बाँटेंगे –(1) समाचार पत्र, (2) पत्रिकाएँ, (3) हैड बिल, (4) पैम्पलेट, (5) होर्डिंग, (6) पोस्टर, (7) रेडियो, (8) टेलीफोन, (9) सैल्यूलर, (10) कार्डलेस, (11) टेपरिकार्डर, (12) रेडियो पेजिंग (13) टेलीप्रिन्टर, (14) ट्रांसमीटर, (15) टेलीविजन, (16) फैक्स, (17) कम्प्यूटर, (18) इण्टरनेट, (19) फिल्म, (20) मोबाइल फोन, सीडी, वी.सी.आर. आदि।

संचार मानव ही नहीं प्रत्येक समाज की आवश्यकता है। संचार के अभाव में किसी प्रकार के समाज का निर्माण संभव नहीं है। संचार के अभाव में विश्व एवं चराचर सृष्टि का विकास असम्भव होगा। मैथुनी सृष्टि का विकास नर–मादा के परस्पर सम्मिलन से ही होता है। अतः संचार मैथुनी सृष्टि का आवश्यक तत्व है, जिसकी अभिव्यक्ति काम (सेक्स) के रूप में होती है। संचार के अभाव में अर्धनारीश्वर सदृश्य परमतत्व ही सृष्टि की निरंतरता रख सकता है।[12] हम जिस संचार की चर्चा कर रहे हैं, उसका आशय मानवीय संचार स है। मानव सभ्यता के विकास म संचार की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। प्रारम्भिक समाज में संचार की प्रक्रिया अतिसीमित तथा समीपवर्ती पड़ोसियों तथा आदिवासियों के लघु समाज में ही संचालित थी। वर्तमान समय में सम्प्रेषण के विस्तृत स्वरूप के कारण एक नये समाज का निर्माण हुआ है।[13] इस प्रकार संचार का स्वरूप एवं प्रक्रिया बदल रही है।

संचार ही वह व्यवहार है, जिसने समाज को संभव बनाया। सामाजिक व्यवहार में संप्रेषण स्पष्ट तथा शंकाहीन भावाभिव्यक्ति है। मनुष्य के संप्रेषण में हाव–भाव, भाषा प्रमुख आधार है। भाषा सम्प्रेषण को स्पष्ट एवं बोधगम्य बनाती है। भाषा व्यक्तियों के व्यवहारों में समरूपता लाती है।[14]

संचार मानव ही नहीं प्रत्येक समाज की आवश्यकता है। संचार के अभाव में किसी प्रकार के समाज का निर्माण संभव नहीं है। संचार के अभाव में विश्व एवं चराचर सृष्टि का विकास असम्भव होगा। मैथुनी सृष्टि का विकास नर–मादा क परस्पर सम्मिलन से ही होता है। अतः संचार मैथुनी सृष्टि का आवश्यक तत्व है। संचार के अभाव में अर्धनारीश्वर सदृश्य परमतत्व ही सृष्टि की निरंतरता रख सकता है।[15]

वर्तमान समय में जनमाध्यमों के बढ़ते प्रभाव के कारण समय एवं स्थान की दूरी घटी है तथा विश्व एक परिवार म बदल रहा है। ऐसी स्थिति में संचार सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी हो गया है। इसकी उपयोगिता मनुष्य, मानव व्यवहार एवं मानव समाज तीनों के लिए है।

आज ऐसा प्रतीत होता है कि वर्तमान शताब्दी में संचार क्षेत्र का वर्चस्व रहेगा। कम्प्यूटर, रोबोटिक्स, दूरसंचार के विभिन्न माध्यमों – टेलीफोन, सेल्यूलर, पेजिंग उपग्रह संचार, आप्टिकल फाइबर, केबल, दूरदर्शन, थ्री–जी, फोर–जी मोबाइल इण्टरनेट आदि ने सम्मिलित रूप से सम्पूर्ण विश्व में सूचना क्रान्ति का सूत्रपात किया है। सूचना प्रौद्योगिकी ने सम्पूर्ण विश्व को भूमण्डलीकृत कर दिया है। आज अत्यन्त पिछड़ा गाँव भी विकसित से विकसित शहरों तक की सारी

सूचनाएँ प्राप्त कर रहा है। आधुनिक युग में मीडिया ने सूचना प्रौद्योगिकी के साथ तारतम्यता स्थापित कर सूचना के साम्राज्यवाद को बौना कर दिया है। सूचना प्राप्ति के बढ़ते स्वरूप के साथ हमें भी और अधिक तेजी से कदम बढ़ाने की आवश्यकता है, यह तभी संभव होगा जब हम दिन प्रतिदिन आने वाली चुनौतियों का सामना दृढ़ता से कर एक अनुकूल वातावरण बना सकें।

सन्दर्भः

1 ओम प्रकाश सिंह (2002) : संचार के मूल सिद्धांत, क्लासिक पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. 3.

2 ओमप्रकाश सिंह : संचार के मूल सिद्धांत, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 2002, पृ. 7.

3 Jean Paul Faure & Andre (1979: Number, Color and Inset Communication, A.B.C. Velag, Zurich, 1979, p. 8.

4 ओम प्रकाश सिंह (2002) : संचार के मूल सिद्धांत, क्लासिक पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. 3.

5 ओमप्रकाश सिंह : संचार के मूल सिद्धांत, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 2002, पृ. 7.

6 ओमप्रकाश सिंह : संचार के मूल सिद्धांत, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 2002, पृ. 7.

7 Kuppuswami, B. : Communication and Social development in India, Sterling Publication, Pvt., New Delhi, 1976, p. 1.

8 Rogers E.M and Flogad Shoemaker, Communication of Innovations (A Cross cultural Approach), The Free Press, New York, 1971, p. 23.

9 Encyclopaedia of Social Sciences, Vol. III-IV, the Mecmillan Company, New York, 1959, pp. 78-80.

10 Rogers E.M and Flogad Shoemaker, Communication of Innovations (A Cross cultural Approach), The Free Press, New York, 1971, p. 23.

11 Alfred Kuhn : The logic of Social Sysyem, Harper & Row Publisher, New York, 1976, p. 5-10.

12 ओम प्रकाश सिंह : संचार माध्यमों का प्रभाव, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 1993, पृ. 58.

13 Encyclopaedia of Social Sciences, Vol. III-IV, the Mecmillan Company, New York, 1959, p. 80.

14 Encyclopaedia of Social Sciences (1959), Vol. III-IV, the Mecmillan Company, New York, 1959, pp. 78-80.

15 ओम प्रकाश सिंह (1993): संचार माध्यमों का प्रभाव, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, पृ. 58.